International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 5 Issue 3, May-June, 2017, Impact Factor: 1.554

भारतीय युवाओं की समस्याएं: एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, राजकीय महिला महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

परिचय

किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस राष्ट्र के विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते हैं । स्वस्थ नवयुवक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं । इन युवकों से ही देश की वास्तविक पहचान होती है । यदि देश के नवयुवकों में चारित्रिक दृढ़ता व नैतिक मूल्यों का समावेश है तथा वे बौद्धिक, मानसिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों से परिपूर्ण हैं तो निस्संदेह हम एक स्वस्थ एवं विकसित राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं । परंतु यदि हमारे युवकों की मानसिकता रुग्ण है अथवा उनमें नैतिक मूल्यों का अभाव है तो यह देश अथवा राष्ट्र का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है क्योंकि इन परिस्थितियों में विकास की कल्पना केवल कल्पना तक ही सीमित रह सकती हैए उसे यथार्थ का रूप नहीं दिया जा सकता है । विश्व एकीकरण के दौर में अन्य विकासशील देशों की भाँति हमारा भारत देश भी विकास की दौड़ में किसी से पीछे नहीं है । विगत कुछ वर्षों में देश में विकास की दर में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है । विशेष रूप से विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में आज हमारा स्थान अग्रणी देशों में है । इसका संपूर्ण श्रेय हमारे देश के युवा वर्ग को जाता है जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि बुद्धि और शक्ति दोनों में ही हम किसी से पीछे नहीं हैं । हमारे देश में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर तथा व्यवसायी निकलते हैं जिनकी विश्व बाजार में विशेष माँग है । निस्संदेह हम चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर हैं । विश्व बाजार में अनेक क्षेत्रों में हमने अपनी उपलब्धि दर्ज कराई है । अनेक क्षेत्रों में हमने गुमनामी के अँधेरों से निकलने में सफलता प्राप्त की है । परंतु हम अपने देश के युवा वर्ग की मानसिकताए उनकी मनरूस्थिति व उनकी वर्तमान परिस्थितियों का आकलन करें तो हम पाते हैं कि उनमें से अधिकांश अपनी वर्तमान परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं हैं । हमारे युवा वर्ग में असंतोष फैल रहा है । देश के युवा वर्ग में बढ़ते असंतोष के अनेक कारक हैं । कुछ तो हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियाँ इसके लिए उत्तरदायी हैं तो कुछ उत्तरदायित्व हमारी त्रुटिपूर्ण राष्ट्रीय नीतियों एवं दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति का भी है। अनियंत्रित रूप से बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप उत्पन्न प्रतिस्पर्धा से युवा वर्ग में असंतोष की भावना उत्पन्न होती है । जब युवाओं के हुनर का कोई राष्ट्र समुचित उपयोग नहीं कर पाता है तब युवा असंतोष मुखर हो उठता है । युवा, नौकरी की तलाश में हैं, लेकिन तय सरकारी नीतियों के कारण योग्य होते हुए भी नौकरी आसानी से नहीं मिल पाती।युवा शिक्षित तो हैं किन्तु उन्हें अ्न्य कोई तकनीकि जानकारी नहीं है। उन्हें कॉलेज से जो शिक्षा मिली है वह केवल किताबी है। उसमें हुनर का अभाव है। अर्थात हमारी शिक्षा नीति भी काफी हद तक सही नहीं है। शिक्षा युवाओं के उपयोगी सिद्ध नहीं हो पा रही है। भारतीय शिक्षा नीति को लेकर कॉरपोरेट जगत की अक्सर शिकायत रहती है कि उसे जो शिक्षा मिली है उसमें गुणवत्ता का अभावहै, कुछ व्यवसाय ही हैं जो वह कर सकते हैं। शिक्षा के आधार पर रोजगार न मिलने पर वह तकनीकि ज्ञान न होने पर, वह स्वयं का कोईरोजगार भी नहीं आरम्भ कर पाते और स्वरोजगार के लिए उपलब्ध अवसरों का लाभ नहीं उठा पाते, शिक्षित होते हुए भी युवा बेरोजगार है। परिणाम स्वरूप आपराधिक घटनाओं मेंयुवाओंकी बढ़ती संलिप्तता पर अक्सर चिंता जताई जाती है।आजीविका कोई अन्य साधन न होने के कारण, युवा अपनी राह से भटक जाता है। अर्थात गैरकानूनी कमाई की खोज में लग जाता है। देश के असामाजिक तत्व युवाओं की समस्याओं का लाभ उठाते हैं।जो अक्सर अपराध द्वारा निर्भरता की ओर जाता है। युवा, अपने परिवार के भावी जीवन की उम्मीद होता है। एक मध्यम वर्गीय परिवार पूरी उम्र की कमाई बच्चों की उच्च शिक्षा पर खर्च कर देते हैं, जिससे बच्चों का भविष्य उज्जवल हो। युवा वर्ग किसी भी देश की रीढ हैं। यदि वह निराश है, कमजोर है, लाचार है तो देश कमजोर है। युवाओं ऊर्जा का भंडार होते हैं, देश को उनकी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देनी चाहिए, किन्तु ऐसा है नहीं, युवाओं में देश के प्रति रोश है। युवा रोजगार की तलाश में देश छोडकर बाहर जा रहे हैं।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति (2002-2007) अब्दुल कलाम कहते हैं कि "युवाओं का संसाधन भारतको एक विकसित राष्ट्र में बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्माण खंड है"।युवा हर देश का मूल्यवान मानव संसाधन है। भारत की कुल जनसंख्या का लगभग चालीसप्रतिशत युवा लोग हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, हमारे देश के युवाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। युवा और बूढ़े के बीच एक पीढ़ी का अंतर है। युवाओं को निर्देशित किया जाना चाहिए और उनकी ऊर्जा का उपयोग राष्ट्र की प्रगति के लिए

किया जाना चाहिए। आज भारत कई सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं से घिरा हुआ है। युवा आगे आकर उनकी जाँच कर सकते हैं और राष्ट्र की भलाई के लिए काम कर सकते हैं। युवा प्राकृतिक आपदाओं के दौरान पीड़ित व्यक्तियों को राहत प्रदान कर सकते हैं। रचनात्मक भूमिका निभाकर युवा भारत को हर क्षेत्र में समृद्ध बना सकते हैं। अनादिकाल से युवाओं में अशांति एक समस्या रही है। यह अतीत में ऐसा था और यह भविष्य में भी ऐसा ही होगा, चाहे वह कितना भी आकर्षक हो और सामाजिक ताने–बाने को चमकाने वाला हो, लेकिन नए डिस्पेंस के तहत महसूस कर सकता है कि वह कितना सुरक्षित और स्थिर है। युवाओं ने कभी भी अपनी पिछली प्रशंसाओं पर आराम नहीं किया है और न ही उन्होंने अपनी वर्तमान संभावनाओं से संतुष्ट महसूस किया है। उनके आवेगों, वृत्ति और अंतर्ज्ञान के तार हमेशा मुखर और जीवंत रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विभिन्न सामाजिक–राजनीतिक प्रणालियों के तहत दुनिया के विभिन्न हिस्सों में युवाओं की समस्याओं का कंटेंट और कंटेंट अलग–अलग है। लेकिन एक बात लगभग तय है कि आधुनिक युवा समस्याओं के खिलाफ है, जो अतीत में मौजूद नहीं था।

2011 की जनगणना के अनुसार:-भारत की जनसंख्या केवल 1,210,193,422 की गिनती के साथ चीन से आगे है। भारत में किशोरों सहित 550 मिलियन युवा हैं। ऐसा अनुमान है कि 2020 तक चीन और अमेरिका में औसतन 37 साल और पश्चिमी यूरोप और जापान में 45 साल की तुलना में औसत भारतीय केवल 29 वर्ष होंगे। । युवा किसी भी राष्ट्र के भविष्य हैं और वे देश के विकास में योगदान करते हैं। इस लेख का उद्देश्य समकालीन युवाओं की संभावनाओं, समस्याओं और दृष्टिकोणों का पता लगाना है। यह विश्लेषण नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और चिकित्सकों को बेहतर ढंग से समझने और आज के युवाओं को प्रभावित करने वाले मुद्दों का समाधान करने और उनकी पूर्ण क्षमता का एहसास करने में सक्षम करेगा। आज के युवा एक ऐसे समाज में रहते हैं जो विभिन्न प्रकार की संभावनाओं में निरंतर प्रवाहित होता है और ऐसी समस्याएं जो इस युग की विशेषता हैं, जिन्हें अक्सर "माइक्रो–चिप युग" कहा जाता है। इंटरनेट क्रांति, महत्वपूर्ण रूप से देशों और निजी क्षेत्र के उद्यमों के बीच बहु–सांस्कृतिक और बहु–जातीय आदान–प्रदान और परिणामी आर्थिक उछाल और अवसादों के बीच संचार में कभी भी सुना–सुनाई नहीं दिया, इससे पहले की इच्छा विभिन्न संस्कृतियों के रीति–रिवाजों और आदतों को फिल्म फ्लिक्स और पंथ पत्रिकाओं के माध्यम से विकृत और प्रस्तुत किया गया है, और अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि नवीनतम उपलब्ध वस्तु के लिए सनक जो एक नज़र को ठाठ और पॉलिश करेगी, इस युग की विशिष्ट हैं। इसके बाद, यह युवाओं के साथ–साथ की विशेषता बन जाता है। हालांकि, इस आशाजनक परिदृश्य में, कुछ कठिन–कठिन और कई बार वास्तव में निराशाजनक वास्तविकताएं, दोनों बाहरी और आंतरिक, युवाओं के मानस पर खेलती हैं और नेतृत्व करती हैं। मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और समाजशास्त्रीय दबावों की एक विस्तृत श्रृंखला बहुत से समय में गरीबी और दुख, इंटरनेट की लत, विभिन्न प्रकार के मानव अधिकारों के उल्लंघन, माइक्रो–चिप वास्तविकता द्वारा उत्पन्न प्रचार–प्रसार की गैर–पूर्ति से उत्पन्न अव्यवस्थाओं और अवसादों सहित विभिन्न प्रकार के व्यसनों की इस युग में विशिष्ट है। आज के युवाओं पर अधिक समझ और ज्ञान है, इसलिए, जो भी युवा लोगों के लिए और उनके साथ काम करता है, उसके लिए सर्वोपरि महत्व है।युवा वर्ग में स्पष्ट परिभाषा का अभाव है और कुछ स्थितियों में कालानुक्रमिक आयु या सांस्कृतिक स्थिति के बजाय किसी एक सामाजिक परिस्थिति पर आधारित हो सकता है। किशोर, किशोरी, या युवा वयस्क जैसी संबंधित श्रेणियां उम्र से संबंधित विशिष्टता की एक बड़ी डिग्री प्रदान करती हैं, लेकिन वे संदर्भोंमें उनके आवेदन में भी भिन्न होते हैं। मुंह भी एक विशेष दिमाग सेट या दृष्टिकोण की पहचान करता है, जैसे कि "वह है।" बहुत युवा हैं "। युवा शब्द युवा होने से भी संबंधित है। यह भी तर्क दिया जाता है कि शब्द 'युवा' दोनों एक विचार के रूप में और एक शब्द के रूप में समाज में एक युवा व्यक्ति या युवा लोगों के समूहों की स्थिति को दर्शाता है। सेल्वम कहते हैं कि: युवा मानव विकास में एक ऐसा चरण है जो बचपन और वयस्कता के बीच है। हालाँकि यह सरल लग सकता है, फिर भी यह वैध है, क्योंकि यह युवाओं की सापेक्षता और भेद्यता को सामने लाता है। युवावस्था बचपन और वयस्कता के संबंध में ही मौजूद है। और यह केवल एक उत्तीर्ण अवस्था है। यह एक सैंडविच चरण है जिसकी अलग पहचान शायद ही कभी पहचानी जाती है।

भारत में लगभग 60 करोड़ आबादी 25 वर्ष से कम उम्र की है और कुल आबादी में लगभग 70% आबादी 40 वर्ष से कम उम्र की है। लगभग 40% भारतीय आबादी की आयु 13 से 35 साल के बीच है, जिसे राष्ट्रीय युवा नीति के अनुसार युवाओं के रूप में परिभाषित किया गया है। युवाओं की इतनी बड़ी असाधारण आबादी भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में है। अगर जनसांख्यिकीय लाभांश का ठीक प्रकार से इस्तेमाल नहीं किया गया, तो इसके परिणामस्वरूप भारत में जनसांख्यिकीय आपदा हो सकती है। युवा तो सही रास्ते पर नहीं ही रहेंगे।इसके अलावा, अगर हम देश की औसत आयु और हमारे नेताओं की औसत आयु की तुलना करें, तो यह स्पष्ट होता है कि देश की औसत आयु 25 वर्ष है जबकि हमारे कैबिनेट मंत्रियों की औसत आयु 65 वर्ष है। इसी वजह से उम्र में एक अंतर मौजूद है, जो एक–दूसरे के विचारों के बीच अंतर को जन्म देता है। भारत में यह अंतर

किसी भी अन्य देश में अंतराल की तुलना में अधिक व्यापक है, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका में यह अंतर 23 वर्षों का है, जबकि जर्मनी में अंतर 10 वर्षों से कम है। इतिहास से पता चलता है कि ऐसी परिस्थिति में जहाँ इस तरह के व्यापक अंतर मौजूद हैं और अधिकांश आबादी युवाओं की है, तो निश्चित रूप से देश में एक या एक से अधिक राजनैतिक गतिविधियों की अगुवाई युवा करते हैं। यह अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन और नस्लीय भेदभाव क्रांति के समय देखा गया था, जो अमेरिका के बेबी बूमर्स के दौरान हुआ था, जब 1946 और 1964 के बीच 79 लाख लोग पैदा हुए थे। यहाँ तक कि अगर आप भारत के इतिहास की जाँच कर रहे हैं, तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि युवा एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं, हमारे सभी स्वतंत्रता सेनानी लगभग युवा ही थे, जिनके संघर्ष के परिणाम स्वरूप हमारा देश आजाद हुआ।लेकिन आज के युवाओं के बीच इस उत्साह की कमी के कारण कहीं न कहीं हताशा और उत्साह की कमी बढ़ रही है। इसका कारण प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी, नौकरी कौशल और कौशल आधारित नौकरी की कमी और अनावश्यक बोझ हो सकता है। वर्तमान में भारतीय युवा नौकरी पाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते दबाव का सामना कर रहे हैं।आने वाले दशक में, यह उम्मीद की जा रही है कि भारतीय श्रम प्रति वर्ष 80 लाख से भी अधिक बढ़ेगा। अधिक से अधिक युवा श्रम बाजार में प्रवेश करेंगे, इसलिए नीति निर्माताओं के सामने असली चुनौती इन शिक्षित कर्मचारियों के लिए बाजार में पर्याप्त रोजगार पैदा करना है ताकि युवा और राष्ट्र को निर्देशित किया जा सके।आज के युवाओं के लिए चिंता के कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र :–

शिक्षा:- भारत में आज के युवाओं का सबसे महत्वपूर्ण विषय शिक्षा है। भारतीय युवा बेहतर शिक्षा, रोजगार संचालित प्रशिक्षण और उज्जवल भविष्य की माँग करते हैं। युवा भी चाहते हैं कि कौशल आधारित शिक्षा और नौकरी की नियुक्ति हर उच्च संस्था का एक हिस्सा होना चाहिए। वास्तविक जीवन परिदृश्य के साथ सिर्फ किताबों की बजाय, कैरियर उन्मुख पाठ्यक्रमों पर और अधिक जोर दिया जाना चाहिए। गैर–शहरी सेटिंग से युवाओं में आमतौर पर अच्छे संचार कौशल का अभाव है। यह भी प्रमुख चिंताओं में से एक है क्योंकि यह नौकरी और प्रगति के रास्ते में एक बाधा के रूप में कार्य करता है।

नौकरी:- भारत में युवा बेरोजगारी बढ़ रही है। विश्व विकास रिपोर्ट 2013 के अनुसार, 15 से 24 वर्ष के बीच 9% पुरुष और 11% महिलाएँ बेरोजगार हैं। 2009-10 के आँकड़ों के अनुसार भारत में 9.7% युवा पुरुषों और 18.7% युवा महिलाएँ बेरोजगार थे। वैश्विक स्तर पर, बेरोजगार युवाओं की संभावना वयस्कों की तुलना में तीन गुना अधिक है। ग्लोबल वित्तीय संकट ने पहले तो युवाओं को चोट पहुँचाई इसके बाद वयस्कों को।एनएसएसओ के सर्वेक्षण के अनुसार, अशिक्षित युवाओं की तुलना में शिक्षित युवा अधिक बेरोजगार है। क्योंकि अशिक्षित युवा सभी तरह के काम करने को तैयार हैं, जबकि शिक्षित लोग अपने से संबंधित क्षेत्र में नौकरियों की तलाश करते हैं। स्नातक युवा जिनके लिए नौकरी पाने के अवसर ज्यादा रहते हैं, इसके बावजूद वही सबसे ज्यादा परेशान हैं।

भ्रष्टाचार :- आज के युवा भ्रष्टाचार के मुद्दे से ज्यादा चिंतित हैं और यही वजह है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे के अभियान में हालिया प्रदर्शनकारियों में से अधिकांश भारतीय युवा ही थे। श्री रतन टाटा ने एक बार कहा, "आज के युवाओं को यह पहचानने की आवश्यकता होगी कि वे एक बड़ी जिम्मेदारी को अपने कंधे पर लें, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी व्यक्ति कानून के ऊपर नहीं है और सांप्रदायिक या भौगोलिक गुटों के बजाय भारत के नागरिकों को 'भारत पहल' के रूप में एकजुट होकर भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए लड़ने की आवश्यकता होगी। "हालंकि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना हर नागरिक की जिम्मेदारी है, लेकिन अपने सदाचार और ऊर्जा के आधार पर युवा इसमें सबसे अधिक भाग लेते हैं। भ्रष्टाचार देश से बाहर होना चाहिए। भारत में युवाओं को पता होना चाहिए कि वे क्या चाहते हैं और कैसा चाहते हैं क्योंकि समाज में सभी अच्छे और बुरे लोग मौजूद हैं। आज हम सफलता के मामले में सबसे ज्यादा निर्भर पैसों पर हैं। लेकिन सफलता इस से ज्यादा है। युवाओं को अपने रोल मॉडल से प्रेरणा और गर्व से जीवन जीना चाहिए।

युवाओंबेरोजगारी की समस्या :-अधिसंख्य भारतीयों के लिए अब चुनौती गुजर–बसर की नहीं है अपितु आकांक्षाओं की भी है।रोजगार सभी के दैनिक जीवन का हिस्सा है व किसी भी व्यक्ति की गरिमा, सही रहन–सहन व मनुष्य के रूप में विकास के लिए अति महत्त्वपूर्ण है। इस तरह सरकार की सोच में भी अच्छे,सम्मानजनक, 'डीसेंट' रोजगारों के माध्यम से गरिमा प्राप्त करने की बात है, पर वास्तविकता इससे बहुत अलग है व ऐसे दृश्यों मेंनजर आती है जैसे कि सफाई कर्मी के कार्य के लिए किसीइंजीनियर का आवेदन करना। आकांक्षाप्रेरित भारतीयों के लिए यह पर्याप्त नहीं है कि कोइ भी रोजगार मिल जाए, उन्हें अपनी शैक्षिकयोग्यता के अनुरूप अच्छा, डीसेंट रोजगार चाहिए, पर इस तरह का रोजगार मिलना बहुत कठिन होरहा है। किसी भी तरह का रोजगार मजबूरी में स्वीकार कर लेना व ऐसा रोजगार प्राप्त करना जोआकांक्षाओं व योग्यताओं के अनुकूल हो यह दो स्थितियां बहुत अलग हैं; पर भारत में तो फिलहालदोनों स्तरों पर विफलता नजर आ रही है। भारत के आर्थिक सवेर्क्षण 2017

में स्वीकार किया गया,"भारत अपनी बढ़ती हुई श्रम शक्ति की आकांक्षाओं की पूर्त्ति के लिए बहुत कम रोजगारों का सृजनकर पाता है, व इस कारण अनेक व्यक्ति कामगार शक्ति से बाहर रह जाते हैं, अनेकों को अर्द्ध याअल्प रोजगार मिलता है व अनेक को बहुत कम मजदूरी या आय मिलती है।"हालांकि भारतीयों को रोजगार मिल तो रहे हैं, पर प्रायः वे ऐसे बुरे या अरुचिकर रोजगारों मेंफंसे हुए हैं जिसमें वेतन बहुत कम है, या ऐसे रोजगारों में है जो उनकी शैक्षिक योग्यता से कम कीश्रेणी के हैं, या ऐसे रोजगारों में किसी तरह आ गए हैं जिसके अनुकूल उनके पास क्षमताएं नहीं हैं।

अच्छे रोजगारों की कमी व आय की बढ़तीविषमता भारत में रोजगार बाजार की असमानताके दो महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं।बड़े वायदे, छोटी वृद्धिवर्ष 2014 के अपने चुनाव घोषणा पत्र में भारतीय जनता पार्टी ने प्रति वर्ष एक करोड़रोजगार सृजन करने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया जिसे अनेक युवा मतदाताओं ने आकर्षितकिया जो शायद स्वयं भी रोजगार ढूंढ रहे थे। पांच वर्ष बाद यह लक्ष्य प्राप्ति से बहुत दूर हैं। विश्वबैंक के अनुसार, पहले जैसे रोजगार को बनाए रखने के लिए भारत में एक वर्ष में 80 लाखरोजगारों का सृजन होना चाहिए । वर्ष 2004-05 और 2011-12 के बीच भारत नेगैर–कृषि क्षेत्र में प्रतिवर्ष 75 लाख रोजगारों का सृजन किया। 2011-12 और 2015-16 के बीचसरकार प्रति वर्ष मात्र 22 लाख रोजगारों का सृजन कर सकी।अधिक चिंताजनक यह है कि उन शिक्षित युवाओं (15-29 आयु वर्ग) की संख्या बढ़ रही है जोअब 'रोजगार, शिक्षा व प्रशिक्षण' किसी में नहीं हैं। इनकी संख्या वर्ष 2004-05 में 7 करोड़ थी, व वर्ष 2004-05 से 2011-12 तक प्रति वर्ष 20 लाख की औसत से बढ़ती रही जबकि वर्ष 2011-12 व 2015-16 के बीच उनकी संख्या औसतन प्रति वर्ष 50 लाख की दर से बढ़ी। यदि यह प्रवृत्ति बनी रही तो अनुमान है कि वर्ष 2017-18 तक 11.5 करोड़ शिक्षित युवाश्रम–शक्ति से बाहर होंगे। इस तरह युवाओं के जनसंख्या में अधिक प्रतिशत से लाभान्वित होने के स्थान पर एक बड़े संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति :-युवाओं और किशोरों को ड्रग्स या संबंधित पदार्थों की लत लगने के कई कारण हैं। आत्मविश्वास की कमी को मादक पदार्थों की लत के प्राथमिक कारणों में से एक माना जाता है। यह अत्यधिक तनाव, सहकर्मी दबाव, बच्चे की गतिविधियों में माता–पिता की भागीदारी की कमी आदि के कारण भी हो सकता है, कुछ लोग मादक पदार्थों की लत और अज्ञानता का कारण हो सकते हैं। हालत के शारीरिक दर्द के साथ नशीली दवाओं की लत का अज्ञानता नशा का एक प्राथमिक कारण बन जाता है। नशीली दवाओं की लत के कुछ कारण यहां दिए गए हैं।

उच्च स्तर का तनाव :-ऐसे युवा, जिन्होंने नौकरी की तलाश में अभी–अभी अपना कॉलेज जीवन शुरू किया है या एक नए शहर में चले गए हैं, अक्सर जीवन परिवर्तन के साथ समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे दवाओं और इसी तरह के पदार्थों के उपयोग के माध्यम से तनाव को कम करने की अधिक संभावना रखते हैं। वास्तविक समस्या का सामना करने और उससे निपटने की तुलना में एक आसान निर्धारण अक्सर आसान लगता है। अवैध दवाओं की कोशिश करने से लत लग सकती है और दीर्घकालिक आदत बन सकती है।

सामाजिक दबाव :-आज, हम एक अत्यधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में रह रहे हैं और ऐसी दुनिया में विकसित होना मुश्किल है। हमेशा युवा और बूढ़े लोगों में एक सहकर्मी दबाव होता है। हालाँकि, यह कभी दिखाई नहीं देता है। बहुत से युवाओं को दवाओं, धूम्रपान और शराब पीने के दबाव का अनुभव करने की उम्मीद है। युवाओं को उस व्यक्ति के लिए मुश्किल होता है जो शराब या धूम्रपान नहीं करता है। जैसा कि वे अलग–थलग महसूस करते हैं और एक सामाजिक बहिष्कार की तरह, वे ड्रग्स लेने की आदत बनाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति :-दवाओं की कोशिश करने का एक और प्राथमिक कारण मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति है। जो लोग भावनात्मक रूप से कमजोर होते हैं, वे दुनिया के तथ्यों के बारे में उदास महसूस करते हैं। वे स्वतंत्र महसूस करने के तरीके खोजते हैं और जीवन को सामान्य तरीके से जीते हैं क्योंकि वे बड़े होने की अवधि से गुजरते हैं। ऐसी स्थिति में, वे ड्रग्स लेने की आदत बनाते हैं और लत की वजह बन सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक आघात :-मनोवैज्ञानिक आघात का एक इतिहास मादक द्रव्यों के सेवन के जोखिम को बढ़ाता है। मनोवैज्ञानिक आघात से पीड़ित 75% से अधिक लोग स्वयं–चिकित्सा रणनीति के एक भाग के रूप में ड्रग्स का उपयोग करते हैं या आत्म–विनाशकारी व्यवहारों के लिए एक अवसर प्रदान करते हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाएं दवाओं के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं, और इसलिए उन्हें समान प्रभावों के लिए कम जोखिम की आवश्यकता होती है। इन दवाओं की उपलब्धता परिवारों के भीतर नशे की लत के व्यवहार के अपराध में एक अभिन्न भूमिका निभाती है।

नशीली दवाओं के दुरुपयोग के लिए जोखिम :-नशीली दवाओं के दुरुपयोग के लिए जिसमें युवा लोगों को उठाया जाता है, एक और कारण है कि युवा लोग नशे के आदी हो जाते हैं। यदि व्यक्ति उस क्षेत्र में बड़े होते हैं जहां वयस्क दवाओं का उपयोग करते हैं, तो व्यक्ति को स्वयं पदार्थ की कोशिश करने की संभावना है। दवाओं और संबंधित पदार्थों को बंद रखने के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करना बेहद महत्वपूर्ण है। ड्रग्स के बारे में वास्तविक जानकारी प्रदान करना ड्रग की लत को रोकने का सबसे अच्छा तरीका है।

युवाओं की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्याएं :-

अलगाव और अकेलापन महसूस करना :-युवाओं के बीच एक बड़ी समस्या यह है कि उन्हें लगता है कि वे अकेले हैं। वे कंपनी में होना चाहते थे; लेकिन हालात और उनके भीतर की भावना अकेले होने को मजबूर करती है। उन्हें मूडी बनाता है और कभी–कभी उन्हें अवसाद या एक तरह के असामाजिक रवैये की ओर भी ले जाता है। वे आसपास के लोगों के साथ संबंध बनाने के बजाय टीवी या अन्य मेडिया देखना पसंद करते हैं। वे दृश्य मीडिया के सामने अपने समय का निजीकरण करते हैं | वे हमेशा अपनी उपस्थिति और अन्य विभिन्न माध्यमों से दूसरों को आकर्षित करना पसंद करते हैं। टालने की एक या थोड़ी सी भी चूक उनके दिमाग के लिए बहुत बड़ा घाव होगी। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए, जो कुछ भी संभव हो, उनका अर्थ है। यह फिर से एक प्रकार की अवसादग्रस्तता और नकारात्मक भावना का कारण हो सकता है क्योंकि उनके सहकर्मी आसानी से उनके कृत्रिम चरित्र की पहचान करेंगे।

आपराधिक प्रवृत्ति :- अक्सर वे आपराधिक गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं। वे अपनी भाषाई परिस्थितियों से आपराधिक प्रवृत्ति विकसित करते हैं। वे अपने दिमाग में आसानी से एक असामाजिक रवैया विकसित कर लेते हैं जिसके द्वारा उन्हें आपराधिक गतिविधियों को करने के लिए मजबूर किया जाता है ।

भावनात्मक असंतुलन :- आधुनिक युवा अपने भावनात्मक जीवन में बहुत असंतुलित हैं। शोध बताते हैं कि वे अपने आईक्यू (इंटेलिजेंट क्वोटिएंट) की दर से उच्च हैं, लेकिन ईक्यू (इमोशनल कोटियंट) में गहरे हैंस्तर। वे नहीं जानते कि तनाव को कैसे दूर किया जाए और घुटने नहींएक जोखिम वाले व्यक्ति का सामना कैसे करें। वे पर्याप्त कुटिल हैं, लेकिन विवेकपूर्ण नहीं हैं। उनके बीच प्रेम संबंधों की विफलता। उनका जीवन भावनात्मक परिपक्वता के विवेक की कमी के कारण सेक्स रैकेट के लिए अधिक खुला है।

हीन भावना :- आजकल उनके बीच बहुत अधिक हीन भावना देखी जा सकती है। वे एक प्रतिष्ठित समूह के सामने सामने नहीं आ रहे हैं। उन्हें लगता है कि वे योग्य नहीं हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे पापी और असामाजिक हैं। उन्हें लगता है कि वे समाज, उनके शिक्षकों और माता–पिता के व्यवहार के अनुसार नहीं हैं।

आत्महत्या की प्रवृत्ति :-उपरोक्त सभी समस्याओं के कारण हो सकता है कि उनके पास आत्महत्या की प्रवृत्ति भी हो। मूर्खतापूर्ण लोगों के लिए वे अपना जीवन समाप्त करना पसंद करते हैं। परीक्षाओं में असफलता और प्रेम की विफलताएँ आत्महत्या करने के लिए पर्याप्त हैं। यौन दुर्व्यवहार करने वालों में पहले आत्महत्या की प्रवृत्ति थी, लेकिन बाद में शोधों से पता चलता है और ऐसा लगता है कि यौन दुर्व्यवहार एक पर्याप्त कारण नहीं है।

मनोवैज्ञानिक समस्याओं के पीछे कारण :-युवाओं के जीवन में कई कारण और कारण होते हैं जो उनके जीवन में मनोवैज्ञानिक समस्याएं पैदा करते हैं। ये समस्याएं उनके युवा वयस्क होने की मात्र घटनाओं के कारण नहीं होती हैं; लेकिन उसके व्यक्तित्व के विभिन्न चरणों के माध्यम से विकसित होते हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित कारण हैं:

1. शारीरिक समस्या :- शारीरिक समस्याएं मुख्य कारणों में से एक हैं जो युवाओं को मानसिक या मनोवैज्ञानिक समस्याएं पैदा करती हैं। कमी शारीरिक फिटनेस उन्हें नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। गरीबी, कुपोषण और बीमारियों के कारण शारीरिक समस्याएं हैं।

2.दरिद्रता :- वर्गों के बीच आर्थिक अंतर को कम करने के लिए प्रणाली में सुधार करने के बजाय, अगर हिंसा पर अंकुश लगाने के लिए thesocietyने मशीनरी का निर्माण किया, तो यह कहीं नहीं जाता है। लोगों की गरीबी बच्चे के मानसिक–सामाजिक विकास को प्रभावित करती है।

3. माता पिता द्वारा नियंत्रण :- माता–पिता के नियंत्रण के प्रकार और पैटर्न और वेंबच्चों के विकास पर eirप्रभावपिछले कई दशकों में काफी शोध का फोकस रहा है। हालांकि विशिष्ट प्रकार भिन्न होते हैं, शोधकर्ताओं ने लगातार सामयिक अभिभावकों के व्यवहार की अवधारणा में नियंत्रण की पहचान की है। बच्चों के माता–पिता के नियंत्रण के कई तरीकों से निर्माण की जटिलता की पुष्टि की जाती है और उनका संचालन किया जाता है। इसलिए यह उल्लेखनीय है कि बच्चों पर माता–पिता के नियंत्रण के प्रभावों का अनुभवजन्य साक्ष्य अक्सर असंगत रहाहै|

मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर काबू पाने के सुझाव :-युवाओं को मनोवैज्ञानिक समस्याएं मिली हैं और उन्हें एक अच्छे व्यक्तित्व के लिए इससे छुटकारा पाना चाहिए। समस्याओं के पीछे के कारणों को उनके व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए दूर किया जाना चाहिए। निम्नलिखित कुछ सुझाव हैं:-

उचित मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण :- आज हमारे देश में कई मनोवैज्ञानिक केंद्र उपलब्ध हैं। उन्हें केंद्रों को निर्देशित किया जाना चाहिए और उन्हें अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि उन्हें बुनियादी मनोवैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त हो सके। यह स्कूल स्तर से ही मनोविज्ञान के प्रारंभिक पाठ्यक्रम होंगे। विकास के अपने प्रारंभिक चरण से ही किसी व्यक्ति का इलाज करना महत्वपूर्ण और उचित है। उसके लिए माता–पिता और शिक्षकों को अपने बच्चों या छात्रों को ठीक से शिक्षित करने के लिए उचित रूप से प्रशिक्षित होना चाहिए। मानव मनोविज्ञान के उचित ज्ञान और मनोविज्ञान की बुनियादी शिक्षा में युवाओं की वर्तमान समस्याओं के लिए एक उपाय का विस्तार होगा। यह एक निवारक के रूप में भी कार्य करता है।

परामर्श और मार्गदर्शन :- जो युवा पहले से ही मनोवैज्ञानिक दोषों से प्रभावित हैं, उन्हें परामर्श केंद्रों और उचित रूप से निर्देशित किया जाएगा। माता–पिता और करीबी लोगों की ओर से व्यक्तिगत देखभाल युवाओं को उचित तरीके से अपने व्यक्तित्व का निर्माण करने में मदद करेगी।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सम्मान करना :- किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में व्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान करना बहुत महत्वपूर्ण कारक है। अधिकांश मनोवैज्ञानिक समस्याएं माता–पिता के नियंत्रण के कारण होती हैं। अक्सर माता–पिता अपने बच्चों को बड़े होते लोगों के रूप में देखना पसंद नहीं करते हैं। वे चाहते थे कि उनके बच्चे पहले से ही आज्ञाकारी अस्थि थे। इससे परिवार में संघर्ष पैदा होता है। पिता और माँ उनकी जीवन शैली के नायक नहीं हैं। वे धीरे–धीरे अन्य नायकों और नायिकाओं के बाद जाते हैं; यह बदले में पुत्र / पुत्री के पालन–पोषण की खाई को चौड़ा करता है। इसलिए यह बेहतर है कि माता–पिता अपनी बेटी / बेटी की स्वतंत्रता का सम्मान करें और उनके अच्छे दोस्त बनें। यह उनके व्यक्तित्व को बहुत अच्छी तरह से प्रभावित करेगा और वे सकारात्मक रूप से विकसित होंगे। माता–पिता का नियंत्रण कभी–कभी शिक्षकों, रिश्तेदारों धार्मिक नेताओं के हिस्से से भी हो सकता है, इससे युवाओं के व्यक्तित्व को भी नुकसान होगा। इसलिए युवाओं की गरिमा और प्रतिष्ठा का सम्मान करना अपरिहार्य है।

राष्ट्रीय युवा नीति 2014 में युवाओं को सशक्त बनाने का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। इस नीति में पांच सुपरिभाषित उद्देश्यों और 11 प्राथमिक क्षेत्रों की पहचान की गई है तथा इसमें प्रत्येक के लिए नीतिगत हस्तक्षेप का सुझाव है। प्राथमिक क्षेत्रों में शिक्षा, दक्षता विकास और रोजगार, उद्यमिता, स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवनशैली, खेल, सामाजिक मूल्यों का प्रचार, सामुदायिक भागीदारी, राजनीति और प्रशासन में भागीदारी, युवाओं का जुड़ाव, समावेश और सामाजिक न्याय शामिल हैं। सरकार ने रोजगार बाजार में पूर्ण भागीदारी और रोजगार सेवाओं की उपलब्धता हासिल करने के लिए युवाओं को सक्षम बनाने की पहल की है। सरकार ने ग्रामीण युवाओं के क्षमता निर्माण के लिए दक्षता विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं, खासतौर से गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले (बीपीएल), तथा अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के अंतर्गत आने वाले युवाओं के लिए। स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों, शारीरिक विकास, डिजिटल समावेश, किशोर अपराध और बाल अपराध, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, युवतियों के प्रति भेदभाव और अन्य युवा–विशिष्ट विषयों पर कार्य करने के प्रयास किए गए हैं।

भारत में युवाओं का सशक्तिकरण:-भारत सरकार का भी लक्ष्य युवाओं के नेतृत्व वाले विकास पर है। निष्क्रिय होकर बैठने की बजाए युवाओं को देश के विकास और प्रगति में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। युवा दिमाग को प्रोत्साहित और सशक्त

बनाने के लिए देश की सरकार ने राष्ट्रीय युवा नीति शुरू की है। इसका उद्देश्य युवाओं की सही दिशा में संभावित रूप से निर्देशित करना है जो संपूर्ण रूप से राष्ट्र को मजबूत करने में मदद करेगा।देश में हर बच्चे को शिक्षा मिले यह सुनिश्चित करने के लिए भी कई शिक्षा कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। भारत सरकार लिंग भेदभाव नहीं करती है। देश में लड़कियों को सशक्त बनाने के इरादे से सरकार ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम शुरू किया है।युवा मामलों का विभाग युवाओं के सशक्तिकरण में भी सक्रिय रूप से शामिल है। इसने देश में युवाओं के नेतृत्व के गुण और अन्य कौशल को बढ़ाने के लिए कई पहले कीं हैं।जब देश के युवा अपने कौशल और क्षमता का पूरी तरह उपयोग करेंगे तो देश निश्चित रूप से विकास और उन्नति करेगा और इसे दुनिया भर में एक नई पहचान मिलेगी।

समाज में युवाओं की भूमिका :-अगर देश में युवाओं की मानसिकता सही है और उनके नवोदित प्रतिभाओं को प्रेरित किया गया तो वे निश्चित रूप से समाज के लिए अच्छा काम करेंगे। उचित ज्ञान और सही दृष्टिकोण के साथ वे प्रौद्योगिकी, विज्ञान, चिकित्सा, खेल और अन्य सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं। यह न केवल उन्हें व्यक्तिगत रूप से और पेशेवर रूप में विकसित करेगा बल्कि पूरे राष्ट्र के विकास और प्रगति के लिए भी योगदान देगा। दूसरी ओर यदि देश के युवा शिक्षित नहीं हैं या बेरोजगार हैं तो यह अपराध को जन्म देगा।

निष्कर्ष

एक राष्ट्र जो अपने युवाओं पर ध्यान केंद्रित करता है और उन्हें विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से अधिकार देता है वह सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत मजबूत और बुद्धिमान युवाओं के निर्माण के लिए काम कर रहा है। हालांकि हमें अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है।युवाओं में एक राष्ट्र को बनाने या बिगाड़ने की शक्ति है। इसलिए युवा दिमाग का पोषण बहुत सावधानी से किया जाना चाहिए ताकि उनमें जिम्मेदार युवाओं को विकसित किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Planning commission. New Delhi: 2008. Sep, [accessed on June 18, 2012]. Report of the Steering committee on youth affairs and sports for the eleventh five year plan (2007-12) p. 41
2. *National Health Profile 2011*. New Delhi: Prabhat Publicity; 2011. [accessed on June 18, 2012]. Central Bureau of Health Intelligence. Demographic indicators.
3. Dev SM, Venkatanarayana M. Mumbai: indira Gandhi Institute of Development Research; 2011. [accessed on December 28, 2012]. Youth employment and unemployment in India.
4. World Health Organization; 2011. [accessed on June 8, 2013]. Young people: health risks and solutions. Fact sheet no. 345.
5. National Youth Policy 2003. Department of Youth Affairs. Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India. [accessed on January 16, 2013]
6. Scheme of National child labour project revised-2003. Ministry of Labour and Employment, Government of India. [accessed on September 17, 2013].
7. Noor Mohammad ; Indian Youth: Problems and Prospects Hardcover – 1 March 1997
8. A.P.J. Abdul Kalam ; Mission India: A Vision for Indian Youth
9. Dhurjati Prasad Mukerji : The problems of Indian youth 1946
10. Renuka Singh: Problems of Youth Serials Publications; 1st edition (1 January 2005)